अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जुलाई-2024

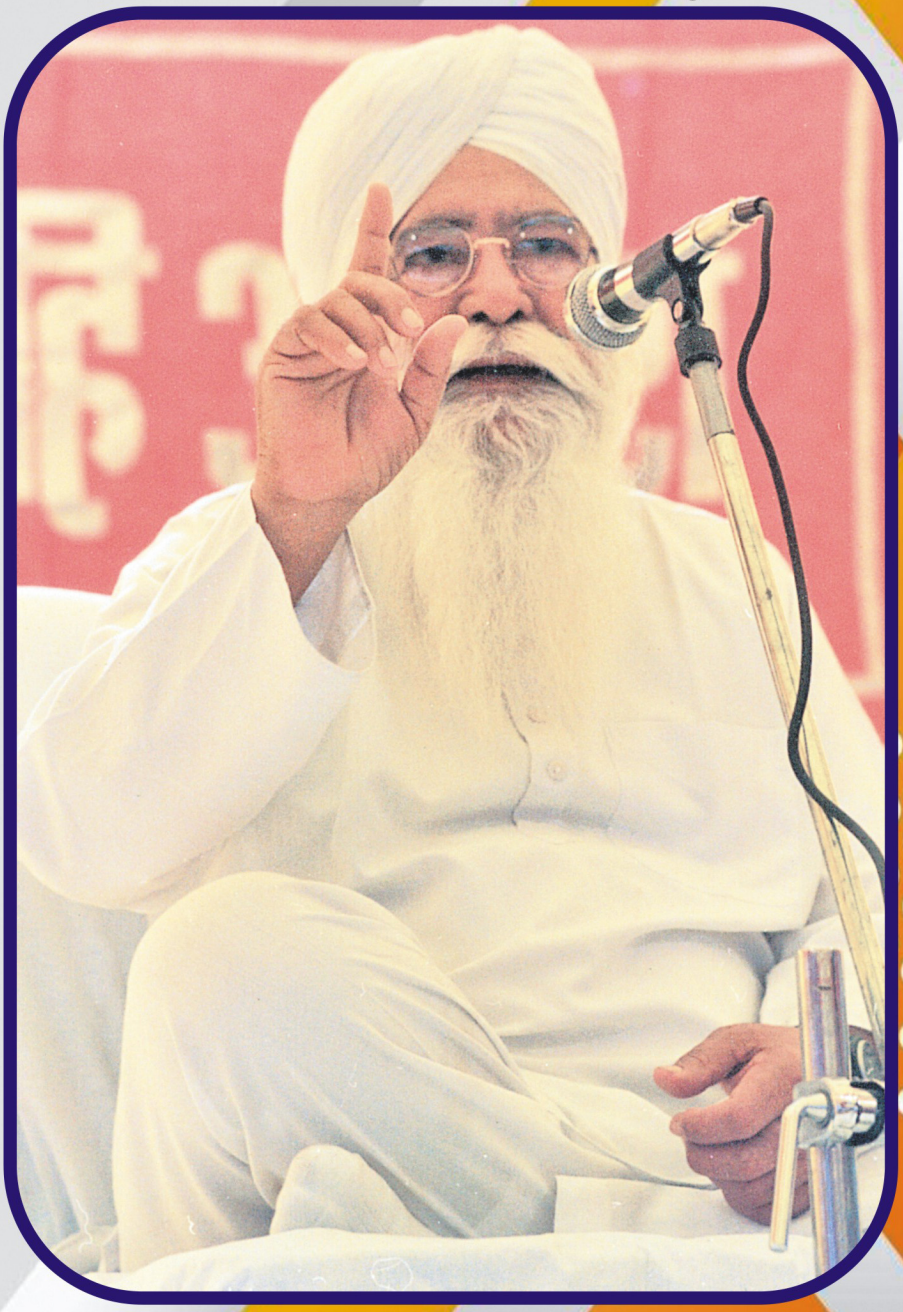

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–बाइसवां	अंक–तीसरा	जुलाई–2024

2 पीर दा विछोड़ा दुःख

3 परमात्मा की भक्ति

27 आत्मा का शीशा

32 धन्य अजायब

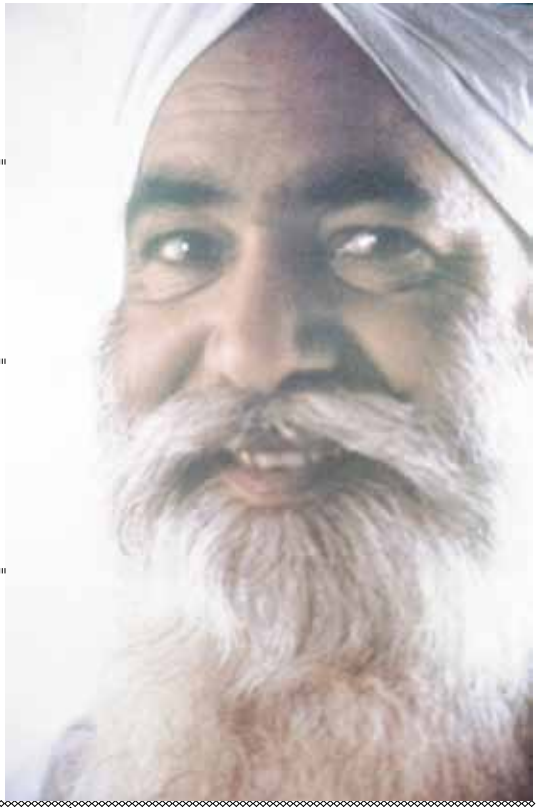

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71
उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **विमल वालिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 268 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

पीर दा विछोड़ा दुःख जिंद मेरी सैहंदी ना

पीर दा विछोड़ा दुःख, जिंद मेरी सैहंदी ना
सतगुरु नूं देख–देख, भुख मेरी लैहंदी ना, x 2
पीर दा विछोड़ा .....

1. *जिस तन लागे, सोई तन पाई,*
होर कौन जाने, पीर पराई, x 2
बण गईयां जिंद मेरी ते, जिंदड़ी हुण रैहंदी ना,
सतगुरु नूं देख–देख .....

2. *खुशियां दी खेती उजड़ी, गमियां सिर पै गईयां,*
दिल दियां मेरियां सद्धरां, दिल विच ही रह गईयां, x 2
खुशियां दे ढहे मुनारे, सुख दा साह लैंदी ना,
सतगुरु नूं देख–देख .....

3. *वड–वड के खांदा अंदरों, दुःखड़ा प्रीत दा,*
घड़ी दा विछोड़ा, चार युगां जेहा बीत दा, x 2
सांईं है सिर ते जिहदा, मुश्किल ओहनूं पैंदी ना,
सतगुरु नूं देख–देख .....

4. *सुखां विच सारी दुनियां, नेड़े हो बैहंदी ऐ,*
भीड़ पई तों कोई, सार ना लैंदी ऐ, x 2
सतगुरु दे बाजों सजणा, पूरी कदे पैंदी ना,
सतगुरु नूं देख–देख .....

5. *धन कृपाल धन, तेरी कमाई ऐ,*
दुःखिए 'अजायब' दी तैं, दर्द मिटाई ऐ, x 2
धक्के मैं दर–दर खांदी, जे शरण तेरी पैंदी ना,
सतगुरु नूं देख–देख .....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा की भक्ति

10 फरवरी 1977 | पलटू साहब की बानी | 77 आर.बी.(राजस्थान)

तन मन लज्जा खोई कै भक्ति करौ निर्धार।
भक्ति करौ निर्धार लोक की लाज न मानौ।।

यह पलटू साहब की बानी है, आप अपने कलाम में बहुत लाधड़क होकर लिखते हैं कि जब **परमात्मा की भक्ति** करते हैं तो उसमें सबसे बड़ी रूकावट लोक–लाज है। पहले माँ–बाप ताने–मेहणे मारते हैं कि बच्चा त्यागी हो गया है, इसे भक्ति अच्छी लगती है। यार–दोस्त ताने–मेहणे मारते हैं कि तू किस तरफ लग गया है, भक्ति तो बूढ़े लोग करते हैं? यह उम्र तो खाने–पीने की है।

थोड़े ही ऐसे भाग्य वाले घराने हैं जिनमें माता–पिता जीवित महापुरुष को मानते हैं। आमतौर पर ऐसे घरानों में ऐसी महान हस्तियाँ आती हैं जो जीवित महापुरुष को नहीं मानते, वे एक समाज में जकड़े होते हैं, समाज के रस्मों–रिवाज ही पूरा करना जानते हैं। हमें पता है कि धर्म किसी को भी अत्याचार करना नहीं सिखाता लेकिन इतिहास इस चीज़ का गवाह है कि धर्म की आड़ में दुनिया ने अत्याचार किए, सन्त–महात्माओं को कष्ट दिए, दुःख–तकलीफें दी।

आप किसी भी महात्मा की हिस्ट्री पढ़कर देखें, जब मोहम्मद साहब आए तो उन्होंने दुनिया को रोशनी दी कि जिस खुदा की आपको तलाश है वह खुदा आपके जिस्म के अंदर है। सच्ची मस्जिद आपका जिस्म है लेकिन शराह के कैदियों ने उनकी बात समझने की बजाए उन्हें घर से निकाल दिया। यहां तक कि वे जब घर से निकले तो लोग अपने घरों की छत पर खड़े हो गए और वे जिस गली से गुज़रे, दोनों तरफ से उनके सिर पर थूँका, उनके ऊपर कूड़ा–कचरा फैंका फिर उन्हें मारा–पीटा,

उनके दांत निकालकर देखे कि कहीं ये ज़िंदा तो नहीं? लेकिन आज लोग उनकी कब्र पर माथा टेकने में ही मुक्ति समझते हैं। पलटू साहब कहते हैं:

जगत भगत से बैर है चारों जुग परमान।

यह कोई नई बात नहीं। सतयुग, त्रेता और द्वापर किसी भी युग में अगर किसी ने **परमात्मा की भक्ति** की तो भक्त और जगत का मिलाप कम ही हुआ है। गुरु साहब कहते हैं:

भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइआ।

भक्तों और दुनियादारों के रास्ते अलग–अलग हैं। दुनियादार कहते हैं कि खाओ, पीओ और मौज उड़ाओ, कौन किसी से लेखा पूछता है? लेकिन भक्त कहते हैं कि देखो भाइयो, साँस–साँस का लेखा लिया जाएगा और मौत जरूर आएगी।

प्रह्लाद ने क्या जुर्म किया था? वह भक्ति करता था और यही कहता था कि भक्ति करें, राम हर जगह व्यापक हैं लेकिन उसके पिता ने उसे कितने कष्ट दिए वह फिर भी नहीं माना। जब गुरु नानक साहब आए तो उन्होंने भक्ति का नारा लगाया, दुनिया को भक्ति करना सिखाया। सबसे पहले उनकी विरोधता करने वाले उनके माता–पिता ही थे। जो लोग उनके साथ रहते थे, वे भी उन्हें समझाते कि आप व्यापार और कारोबार में दिल लगाएं। जब माता–पिता ही विरोध करें तो दूसरे लोगों के लिए विरोधता करना बहुत आसान हो जाता है इसलिए दूसरे लोगों ने भी उन्हें कुराहिया, गलत रास्ते पर डालने वाला कहना शुरू कर दिया।

हुज़ूर महाराज कृपाल यह बात कहा करते थे कि सच न छोड़ें, सच पर खड़े रहें, सच आखिर सच है। गुरु नानक साहब को पांच सौ साल, मोहम्मद साहब को चौदह सौ साल हो गए हैं लेकिन आज भी लोग उन्हें बहुत प्यार और इज्जत से याद करते हैं। आज भी महान हस्तियां इस दुनिया में आती हैं क्योंकि मालिक ने तो जीवों को तारना है। जिसने यह

खिल्कत पैदा की है, उसे बहुत फिक्र है लेकिन हम दुनियादार आज भी इस बात को नहीं समझ सकते अगर पिछले वक्त में उस मालिक ने सन्तों को भेजा है तो वे आज भी भेज सकते हैं और आगे भी भेजेंगे।

ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु।।

पूरे गुरु, सन्त–सतगुरु के बगैर दुनिया कभी भी सूनी नहीं हो सकती। कबीर साहब ने कहा है:

अग्नि लगी आकाश को चढ़–चढ़ पैन अंगियार।
सन्त न होते जगत में तो जल मरता संसार।।

दुनिया बांस की तरह है, जिस तरह बांस रगड़कर अपने अंदर से आग पैदा करके अपने आप ही जल जाता है, उसी तरह इंसान अपने अंदर से मैं–मेरी और क्रोध की लपटें निकालकर अपने आप का विनाश करता रहता है। सन्त संसार में आकर हमें समझाते हैं कि हमने जो हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई के बँटवारे किए हुए हैं, जितने भी लेबल लगाए हुए हैं, ये सिर्फ खुदगर्ज लोगों ने आपको समझाया कि आप यह है। परमात्मा ने तो इंसान बनाया है, किसी पर कोई लेबल लगाकर नहीं भेजा। आप सबका परमात्मा एक है, वह सबका दाता है सबका बादशाह है। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई औरत–मर्द सबको **परमात्मा की भक्ति** करने का एक जैसा हक़ है।

हम जिस धरती और आसमान के नीचे रह रहे हैं वह भी एक ही है सबको यहां रहने का हक़ है। चाहे कोई पूर्व में जन्मा है या पश्चिम में जन्मा है सबके हाथ, कान, नाक वगैरह एक जैसे हैं सब एक ही तरीके से जन्म लेते हैं और सबको एक ही तरीके से मौत आती है। यह कैसे हो सकता है कि हिन्दुओं का कोई और परमात्मा हैं, ईसाइयों का कोई और परमात्मा है, अमेरिका में रहने वालों का कोई और परमात्मा है या हिन्दुस्तान में रहने वालों का कोई और परमात्मा है।

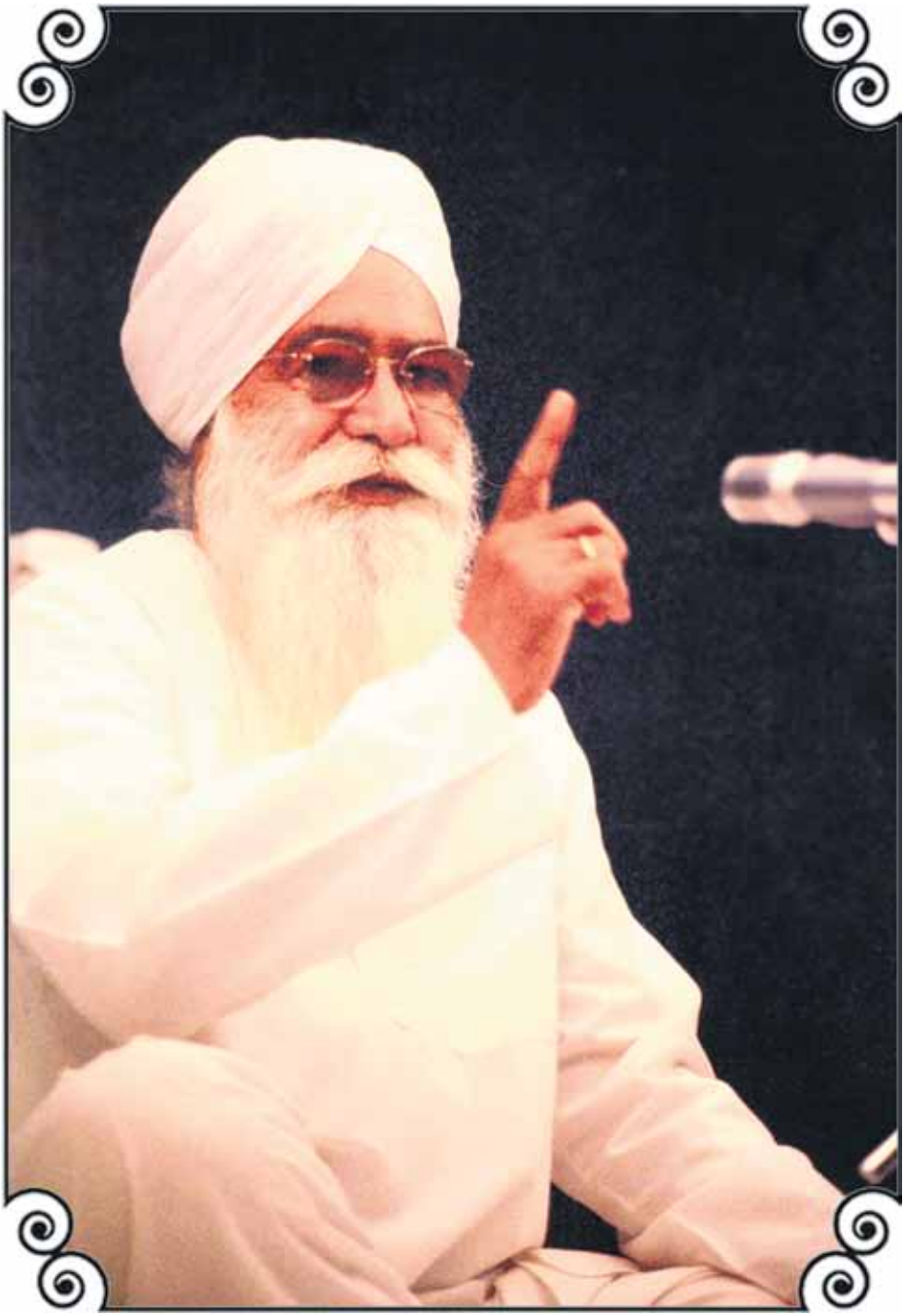

जिस समय पलटू साहब ने अपनी बानी, अपने मिशन का प्रचार किया उस समय वहाँ वैरागी लोगों का बहुत जोर था। उन लोगों ने देखा की हमारी दुकानदारी में फर्क पड़ रहा है। स्वामी जी महाराज भी कहते हैं:

पंडित भेख पेट के मारे। वे संतन पर करते तान।
हित कर संत उन्हें समझावें। वे मानी नहिं मानें आन।
उनके चाह मान और धन की। परमारथ से खाली जान।

ये लोग पेट की खातिर महात्मा पर कीचड़ फैंकना शुरू कर देते हैं। सन्त उन्हें भी बहुत प्यार से समझाते हैं कि आप भी **परमात्मा की भक्ति** के हकदार हैं। आओ, हम सब मिलकर प्रभु की भक्ति करते हैं अगर आप सहयोग दें, और लोग भी इधर लगें तो हो सकता है कि और भी ज़्यादा दुनिया भक्ति करने लग जाए लेकिन उनके दिल में यही है कि लोग हमारा मान करें, हमें माया दें। वे किसी का मान देखकर खुश नहीं होते कि कहीं ऐसा न हो कि लोग हमें माया देना बंद कर दें और हमारे रोज़गार में फर्क पड़ जाए इसलिए वे सन्त–महात्माओं पर कीचड़ फैंकते हैं। सन्त उन्हें भी समझाते हैं लेकिन वे लोग परमार्थ से खाली जाते हैं।

जब पलटू साहब ने अपने मिशन का प्रचार किया, वैरागी लोगों को बहुत जलन हुई, ईर्ष्या उठी। वह ईर्ष्या यहां तक बढ़ गई कि उन लोगों ने पलटू साहब को उठाकर ज़िंदा जला दिया। मालिक के प्यारे अपना मिशन लेकर आते हैं, वे कभी भी दुनिया की परवाह नहीं करते क्योंकि परमात्मा दुनिया से बड़ा है। पलटू साहब कहते हैं कि आप दुनिया की परवाह क्यों करते हैं? मालिक के साथ जुड़े रहें, मालिक में समाए रहें। यह न सोचें कि लोग हमें क्या कहेंगे?''

राजा पीपा की मशहूर कहानी है, वह देवी का भक्त था। उसने घर में मंदिर बनाया हुआ था उसे ऐसी आवाज़ आती थी कि पूरे गुरु की बहुत जरूरत है, पूरे गुरु के बगैर काल खाल निकाल देगा। उसने अपने वज़ीरों

और अहलकारों से पूछा कि क्या इस वक़्त कोई सन्त हैं? उन्होंने बताया कि हाँ, रविदास जी इस वक्त नामदान देते हैं। अब दिल में परमार्थ का बहुत शौक़ था इसलिए राजा उनके पास चला गया लेकिन लोक–लाज आकर घेर लेती है। राजा ने सोचा अगर प्रजा को पता चल गया तो प्रजा क्या कहेगी कि एक क्षत्रिय राजपूत राजा होकर चमार के पास जाता है।

गंगा का पर्व लगा हुआ था, लोग वहाँ गए हुए थे। राजा पीपा मौका देखकर रविदास जी के पास चला गया, आगे रविदास जी टिंड से चमड़ा भिगोने वाले बर्तन में पानी डाल रहे थे। रविदास जी के दिल में ख्याल आया कि यह एक राजा होकर मुझ गरीब के घर आया है, मैं इसे कुछ दूं। रविदास जी ने कहा, ''राजा हाथ करो।'' महात्मा का रौब होता है, राजा पीपा उन्हें मना नहीं कर सका और हाथ कर दिए। राजा के मन में ख्याल आया अगर मैं यह पानी पी लूंगा तो चमार बन जाउंगा। राजा ने खुली बाहों वाला कुर्ता पहना हुआ था, उसने हाथ तो किए लेकिन वह पानी नहीं पिया और कुर्ते की बाहों में से उस पानी को नीचे गिरा दिया।

राजा ने जल्दी से घर आकर धोबी को बुलाया और उससे कहा, ''इस कुर्ते को घाट पर खड़े पानी में धोकर लाना है, कहीं बहते हुए पानी में धोया तो जितने भी लोग यह पानी पिएंगे, वे सब चमार बन जाएंगे।'' धोबी ने अपनी लड़की से कहा कि मैं भट्ठी तैयार करता हूँ, तू इसके दाग चूस ले। वह लड़की उन दागों को चूसने लगी। समझदार आदमी दाग को चूसकर थूंक देते हैं लेकिन वह लड़की नाबालिग थी, वह दाग के पानी को अंदर पीने लगी। यह परम सन्त के हाथ का पानी था, उस वक्त की बहुत दया थी। रविदास जी राजा पीपा को उस पानी के जरिए बहुत कुछ देना चाहते थे। जैसे–जैसे लड़की थूक को अंदर पीती गई वैसे–वैसे उसके पर्दे खुलते गए, वह ज्ञान–ध्यान की बातें करने लगी। आस–पड़ोस और दूसरे गांवों में भी पता चला कि धोबी की लड़की बड़ी महात्मा है।

अब राजा पीपा के दिल में परमार्थ का बड़ा शौक़ था लेकिन अभी भी दिल में डर था कि कहीं लोग उसे देख न लें इसलिए वह रात के वक्त धोबी के घर गया। लड़की राजा को देखकर खड़ी हो गई। राजा पीपा ने कहा, ''देख बेटी, मैं तेरे घर राजा बनकर नहीं आया, इस वक़्त मैं भिखारी बनकर आया हूँ।'' लड़की ने कहा, ''मैं राजा समझकर खड़ी नहीं हुई, मैं तो शुक्राने के तौर पर खड़ी हुई हूँ कि जो राज़, जो हकीकत और जो असलियत थी, वह आपके कुर्ते में ही थी।''

जब नुकसान का पता चला तो राजा पीपा रोया–चिल्लाया कि ऐ लोक–लाज, ऐ ज़ात–पात तेरा बुरा हाल हो! तूने मुझे ठग लिया। ऐसा करते हुए रविदास जी के पास भागकर गया कि महाराज जी कुछ दें। रविदास जी ने कहा, ''देख राजा, वह तो दया–मेहर थी लेकिन अब तुम्हें कमाई करनी पड़ेगी।'' और उन्हें नाम दे दिया। राजा पीपा आला पात्र आत्मा थीं, उन्होंने अच्छी कमाई की। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में उनके शब्द आते हैं, वे परमगति को प्राप्त हुए। कहने का भाव लोक–लाज हमें खत्म कर देती है, मन हमारे अंदर भ्रम पैदा कर देता है।

सन्त वज़ीदा, शाह सिकंदर के बारे में लिखते हैं कि शाह सिकंदर ने किसी से सुन लिया अगर अमृत मिल जाए तो उसे पीकर अमर हो जाते हैं। सिकंदर ने अमृत की बहुत खोज की, जब अमृत मिल गया तो स्वर्ग में राजा इंद्र को बहुत फिक्र हुआ कि यह तो पहले ही ठीक नहीं था कहीं मेरा राज्य न छीन ले। इन्द्र ने एक परी से कहा कि तू कोई ऐसा इलाज कर ताकि सिकंदर यह अमृत न पी सके।

उस परी ने एक ऐसा शरीर बनाया कि जिसके अंदर से पस और रक्त बह रहा था, वह कोढ़ी बनकर बैठ गई। शाह सिकंदर ने हाथ में अमृत का प्याला पकड़ा हुआ था। वह परी कहने लगी, ''देख बन्दे रब के, यह तू क्या कर रहा है?'' सिकंदर ने कहा, ''मैं अमृत पी रहा हूँ। मैंने सुना

है कि यह अमृत पीकर अमर हो जाते हैं।'' वह कहने लगी, ''किसी ने इस वस्तु की मेरे पास भी तारीफ़ की थी तो मैंने भी यह अमृत पी लिया, अब मेरी हालत देख।'' आप जानते हैं कि मन भ्रम में डाल देता है। शाह सिकंदर ने हाथ से प्याला छोड़ दिया। सन्त वज़ीदा कहते हैं:

शाह सिकंदर ढूंढें आब – ऐ – हयात नूं।
विच पहाड़ा फिरदा दिन ते रात नूं।
फिर ना पीता प्याला अपने दसत भर।
वज़ीदा कोण कहे साहेब नूं इंज़ नहीं इंज़ कर।।

दिन–रात ढूँढा और जब हाथ में प्याला आया तो होंठों से लगाकर छोड़ दिया। तब कौन समझाए कि भाई पी ले। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

पार पोंच्या मारीए ऐसा यम का जाल।

कई प्रेमियों का वक़्त आ जाता है, अंदर पर्दा खुलने वाला होता है, दर्शन होने वाले होते हैं तो मन अंदर भ्रम पैदा कर देता है, वे भजन छोड़ देते हैं। जब घाटे का पता चलता है फिर रोते–पछताते हैं।

हमें दुनिया का तो पता ही है अगर कोई बच्चा भक्ति करने लगे तो बुजुर्ग कहते हैं कि तू भक्ति क्यों करता है? भक्ति तो बुजुर्ग करते हैं। बच्चे ने कहा, मेरे तजुर्बे में यह चीज़ आई है कि जब मैं आग जला रहा था तो छोटी लकड़ियों को आग पहले लगी, बड़ी लकड़ियों को बाद में लगी। मौत का क्या भरोसा है कि छोटे को पहले आनी है या बड़े को आनी है।

कर लिया सो काम, भज लिया सो नाम।

मौका मिले या ना मिले, किसी की क्या लाज है? आप भक्ति करें।

देव पितर मुख खाक डारि इक गुरु को जानौ।

हम अपने आप ही देवी–देवता बना लेते हैं, घड़ लेते हैं और उनके आगे माथा टेकते हैं। मैं कई दफा यह बात बताया करता हूँ कि मेरे पिछले गांव में आश्रम के नजदीक एक खेजड़ी का पेड़ था। वहां तक़रीबन सारा

गांव ही सुबह तेल चढ़ाने आता था। मेरे पास कई अफसर आए, वे सारी रात वहाँ तमाशा देखते रहे। हमारे गांव वाले वैसे तो रोज़ उस पेड़ के पास से ऐसे ही गुज़र जाते थे लेकिन उस दिन औरतों ने घाघरे पहनकर, घूंघट निकालकर गुजरना कि आज यहां बाबा प्रकट होगा। डी. एस. पी. लक्ष्मी नारायण बहुत अच्छा प्रेमी था, वह माला वगैरह फेरता था। उसे ये सब देखकर बहुत ही अचरज हुआ कि यह क्या हो रहा है? मैंने कहा कि भई, गाँव के लोग ऐसा करते हैं, यहाँ इनका कोई स्थान बनाया हुआ है।

जब सारा गाँव पूजकर चला गया तो एक मजहबी सिख था, उसकी बारी आई कि मैं भी जाता हूं। उसने भी घर से तेल और सिन्दूर लिया और वहां आ गया। उसने एक कुत्ता रखा हुआ था, वह भी उसके साथ ही आ गया। उसने वहाँ आकर सिर झुकाया, तेल चढ़ाया और सब कुछ किया। जब वह माथा टेक कर मुड़ा तो कुत्ते ने पेशाब कर दिया। हम ऊपर बैठे देख रहे थे। डी. एस. पी. कहने लगा कि यह क्या है? मैंने कहा कि कुत्ता कहता है कि मैं आपकी सारी करनी पर पानी फेरता हूं। जिन्होंने माथा टेका इस देवता ने उन्हें शाबाशी नहीं दी और जिसने पेशाब किया उसे भी बुरा नहीं कहा।

मैं कई दफा अपने पिता की कहानी बताया करता हूँ कि उन्होंने भी शुरू–शुरू में खेत में अपने भाई की मढ़ी बना ली और रोज़ उसकी पूजा करने लगे। मुझे भी कहा कि तू माथा टेक, जब तक मैं छोटा था तब तक तो उनका कहना मानता रहा। जमींदारों को पता है कि गीद्दड़ आमतौर पर ऊँची जगह मल त्यागते हैं। एक दिन की बात है हम खेत में गए, वहाँ गीद्दड़ का मल त्याग किया हुआ था। मैंने पिता जी से कहा, ''आप इसे माथा टेक लें, मैं इसे माथा नहीं टेकता।'' मेरे पिताजी ने मढ़ी से कहा, ''हम तभी तुझे लस्सी चढ़ाएंगे, प्रशाद बांटेंगे जब तू यहाँ गीद्दड़ मारकर रखेगा।'' उसने गीद्दड़ नहीं मारा और पिता जी ने उसे नहीं माना।

जब बाबा बिशन दास हमारे घर आए तब मैंने उन्हें वह जगह दिखाई और सारी बात बताई। बाबा बिशन दास जी ने हंसकर कहा, ''अगर वहां कोई देवता ज़िंदा होता तो वह जरूर गीद्धड़ को हटाता, तेरे साथ बात भी करता मगर तू तो चार ईंटे रखकर उसे मान रहा है।''गुरु साहब कहते हैं:

जो पाथर की पाँई पाइ, तिस की घाल अजाँई जाइ।
ठाकुरु हमरा सद बोलंता, सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता।।

दुनिया कहती है कि धन्ना भक्त ने पत्थर में से परमात्मा पाया लेकिन धन्ना कहते हैं कि जो पत्थर को पूजते हैं उनकी मेहनत ऐसे ही जाती है। मेरे ठाकुर बोलते हैं, सबको दान देते हैं। धन्ना भक्त कहते हैं:

धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ।

मैंने सन्तों से उस मालिक को पाया है जिसने कुल दुनिया की रचना पैदा की है। हम लोग बानी नहीं पढ़ते, उनके कलाम को नहीं मानते बिना सोचे–समझे ही कह देते हैं।

महाराज सावन सिंह कहा करते थे, ''दुनिया कहती है कि धन्ना भक्त ने परमात्मा को पत्थर में से प्राप्त किया। आज दुनिया पत्थर में से परमात्मा को क्यों नहीं प्राप्त कर लेती?'' जिन्होंने नाम दिया होता है उन्हें सेवक की बहुत लाज होती है, उसे तारना होता है। जो कमाई नहीं करता, चोला बदल जाता है सन्त को फिर भी होता है कि किसी और के ज़रिए उसे तारे या खुद आप आएँ।

महाराज सावन सिंह जी एक बहुत दिलचस्प कहानी सुनाया करते थे कि भक्त त्रिलोचन स्वर्ण जाति में और धन्ना भक्त जाट घराने में आए अगर धन्ना भक्त मूर्ख न बनते, मोटी बुद्धि वाले न बनते तो उस पंडित को किस तरह तार सकते थे? धन्ना भक्त रोज़ वहां जाते थे जहां भक्त त्रिलोचन ठाकुर की पूजा करते थे। धन्ना भक्त ने पूछा कि यह क्या है? भक्त त्रिलोचन ने कहा कि मैं ठाकुर की पूजा कर रहा हूँ। धन्ना भक्त ने

कहा, ''ठाकुर क्या देते हैं?'' त्रिलोचन ने कहा, ''जो मुँह से माँगें वही दे देते हैं।'' धन्ना भक्त ने कहा कि एक ठाकुर मुझे भी दें। भक्त त्रिलोचन ने कहा, ''तुझे इसके लिए एक गाय देनी पड़ेगी।'' धन्ना भक्त के पास गाएं थी, उन्होंने एक गाय लाकर त्रिलोचन को दे दी। भक्त त्रिलोचन के दिल में यह था कि यह सीधा–सादा है, इसे क्या पता है? उसने ढंग का ठाकुर भी नहीं दिया एक पत्थर उठाकर पकड़ा दिया।

धन्ना भक्त ने उस पत्थर का क्या करना था, उस पत्थर को अलमारी में रख दिया। दूसरे–तीसरे दिन धन्ना भक्त फिर वहाँ गए। भक्त त्रिलोचन ने रोज की तरह प्रसाद बनाया ठाकुर के आगे रखकर घंटी बजाकर खुद खाने लगा। धन्ना भक्त ने कहा, ''दादा, यह तो ठाकुर के साथ ठग्गी है।'' भक्त त्रिलोचन ने कहा, ''ठग्गी नहीं, ये तो वाशना के भूखे होते हैं।'' धन्ना भक्त ने कहा, ''आपने जो ठाकुर मुझे दिए हैं, वे तो सब कुछ ही खाते–पीते हैं।'' भक्त त्रिलोचन को आश्चर्य हुआ। धन्ना भक्त कहने लगे, ''वे मेरे साथ बातें करते हैं, मेरे सारे काम करते हैं।'' भक्त त्रिलोचन ने कहा, ''मुझे दिखाएगा?'' धन्ना भक्त ने कहा, ''हाँ।''

हुज़ूर महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जिसने देखा है, वह दिखा भी सकता है।'' महाराज सावन सिंह जी एक जगह गए। वहां उन्होंने कहा कि आओ, जिसने रब देखना है, मैं उसे रब दिखा सकता हूँ लेकिन ऐसी किसकी किस्मत है कि जब सन्त ऐसे बोल बोलते हैं तो कोई आगे आकर खड़ा हो जाए। शेर के आगे खड़ा होना बहुत मुश्किल होता है।

धन्ना भक्त, भक्त त्रिलोचन को बाहर ले गए और कहने लगे, ''देख, वे पशु हाँक रहे हैं, गाएँ चरा रहे हैं, खेत को पानी दे रहे हैं।'' भक्त त्रिलोचन ने कहा, ''मुझे नहीं दिख रहे।'' आपको पता है कि जब डॉक्टर ने किसी का फोड़ा साफ़ करना है, बीमारी ठीक करनी है तो पहले उसे जुलाब लगा देता है ताकि दवाई अच्छा असर करे। धन्ना भक्त उन्हें गुस्सा

करने लगे कि तू पराया खाता है, तुझमें और भी ऐब हैं। एक–एक करके सब ऐब बताए। भक्त त्रिलोचन ने कहा, ''मैंने ये सब ऐब छोड़े।'' आपको पता ही है कि गलतियां माननी ही होती हैं। जब इंसान अपनी गलती मान ले तो प्रभु दूर नहीं हैं। जब धन्ना भक्त ने देखा कि अब बर्तन साफ़ है तो उन्होंने तवज्जो दी और उसे परमात्मा दिखा दिया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जिसने प्रभु को दिखाया वही गुरु है लेकिन दुनिया सोचती–समझती नहीं? गुरु साहब कहते हैं:

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा।।
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा।।
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ।।
सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ।।

नामदेव जी, गोबिन्द की भक्ति करके आधी कौड़ी के छिम्पा से लखपति बन गए। सन्त कबीर ने ताने बाने का ख़्याल छोड़कर **परमात्मा की भक्ति** की, वे ऊँचे गुणों वाले गिने गए। रविदास जी के पूर्वज और उनकी जाति के लोग मरे हुए जानवर ढोते थे, जब उनके अंदर मालिक प्रकट हुए तो वे बड़े भक्तों में गिने गए।

भक्त सैन नाई थे, वे लोगों के घर निमंत्रण दिया करते थे और लोगों की मालिश किया करते थे, वे राजा अकबर की भी मालिश करते थे। वे एक दिन भजन में बैठे थे, साध संगत में उनकी सुरत लग गई और वे राजा अकबर की मालिश करने नहीं जा सके। वे सुबह राजा अकबर के पास गए और कहने लगे कि मुझे माफ़ी दे दें। राजा अकबर ने कहा, ''ओ सैन, जैसी मालिश तूने रात को की ऐसी तो कभी किसी ने की ही नहीं।'' कहने का भाव कि भक्तों के काम परमात्मा खुद करते हैं।

इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा।।
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा।।

इतनों को देख–सुनकर कि इन सबको भगवान मिल गए हैं, जाट के दिल में भी ख्याल आया कि तुझे भी मालिक मिलेगें। धन्ना भक्त को भी प्रत्यक्ष मालिक मिले और वे भी बड़े भाग्य वाले हो गए।

आप अंदर जाकर देवता देखें और उनके साथ बात करें। आप सच्चे देवता को मानें, वही कुल मालिक हैं। पिछले ज़माने में लोगों की चढ़ाई होती थी, वे देवी–देवताओं तक जाते थे। दुनिया उन लोगों के पास जाती थी कि महाराज जी हमारा यह काम है। वहां से देव–पूजा शुरू हुई। आज लोगों की चढ़ाई नहीं है, वहाँ तक जाते नहीं। किसी ने दुकान खोलनी है तो वह पंडित को बुलाता है और पंडित गुड़ पर मौली बाँधकर पूजा कर देते हैं अगर दुकान में घाटा पड़ गया फिर पंडित के पास जाते हैं और कहते हैं कि पूजा तो की थी। सन्त कहते हैं कि पूजा किसकी की थी?

कहने का भाव इतना ही है कि हमने सिर्फ मनो कल्पना बनाई हुई हैं, देवताओं के पास नहीं जाते। सन्त किसी देवता की निंदा नहीं करते। देवता हैं, आप उन्हें मानें लेकिन देवता सूक्ष्म देश में बैठे हुए हैं। आप स्थूल का साथ छोड़कर सूक्ष्म बनें, अंदर देवताओं के पास जाएं और उनसे कहें कि आप मेरा यह काम करें। वे आपको हां या न का जवाब देंगे। हम क्या करते हैं, हम खुद ही पत्थर के देवता घड़ लेते हैं, आप ही सब कुछ बना लेते हैं। पलटू साहब कहते हैं कि ऐसे देवताओं के सिर पर खाक डालें, ऐसे देवता को मानने का क्या फायदा है?

तजि दो कुल की रीति खोलि घूंघट को नाचो।
बेद पुरान मत काच काछनी काछौ साचौ।।

आपके कुल में जो भी रीति हैं, उसे छोड़ दें क्योंकि मैंने पहले ही कहा है कि बहुत कम ऐसी महान हस्तियां आई हैं जिनके माता–पिता जीवित

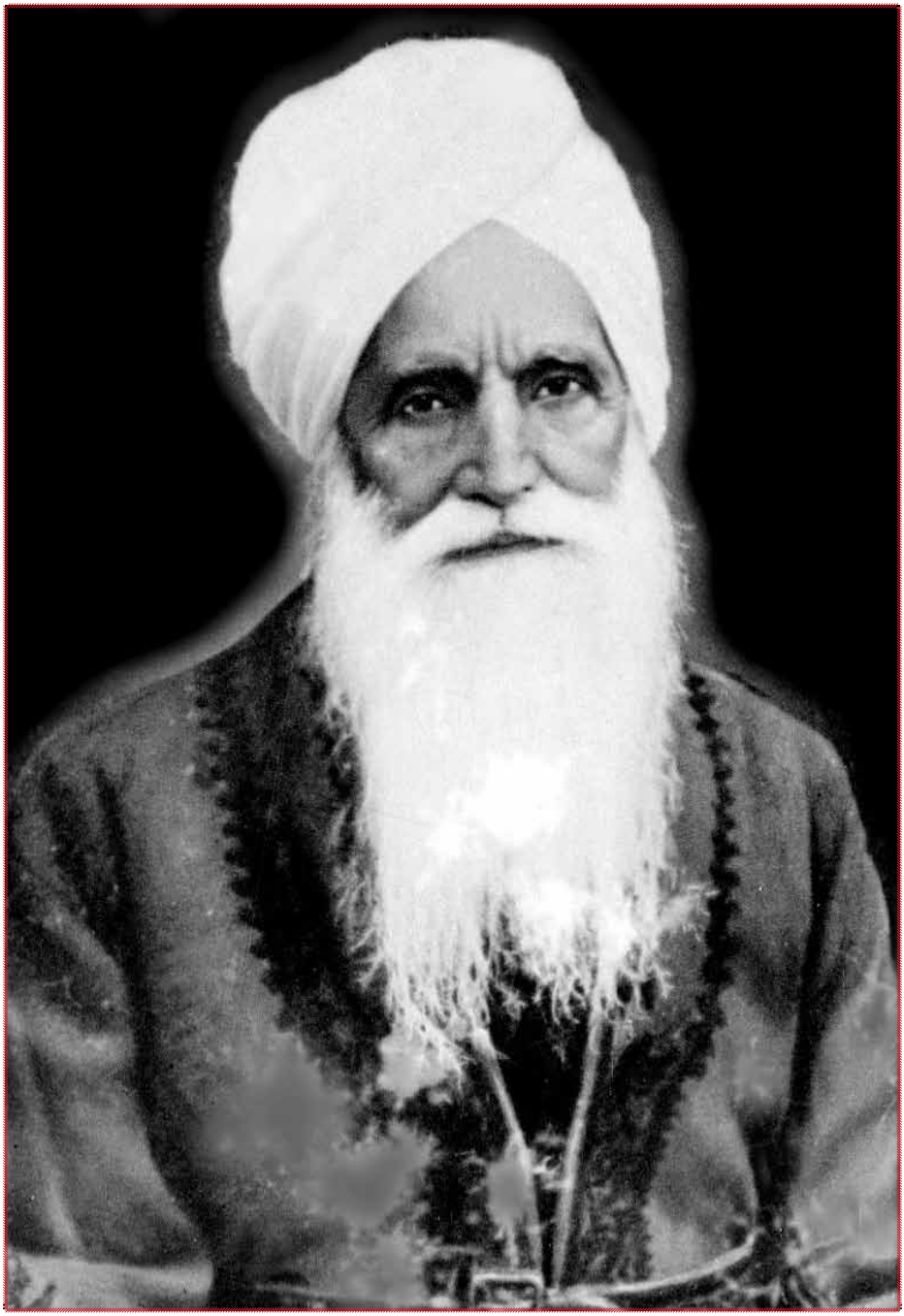

महापुरुष को मानते हों। यह लोक–लाज महाराज सावन सिंह जी के आगे आकर भी खड़ी हो गई थी। वे अपनी हिस्ट्री बताया करते थे कि जब बाबा जयमल सिंह जी उनके घर सतसंग करने के लिए गए तो लोक–लाज से डरते हुए महाराज सावन सिंह जी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब लेकर आए और उस पर सतसंग करवाया कि कहीं लोग यह न कहें कि अब यह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को नहीं मानते।

रात में बीबी रुक्को छत पर चढ़कर स्वामी जी महाराज के भजन बोलने लगीं। महाराज सावन सिंह जी कहने लगे कि मैं उन्हें हटा नहीं सका। बस! उनके भजन बोलने की देर थी कि लोक–लाज जो हर एक के आगे आकर रुकावट बन जाती है, दो मिनट में दूर हो गई। लोक–लाज और कुल रीति को छोड़ दें। स्वामी जी महाराज भी कहते हैं:

पिछलों की तज टेक तेरे भले की कहूँ।
वक़्त गुरू को मान तेरे भले की कहूँ।।

मैं तुम्हारे भले की बात कहता हूँ कि आप लोक–लाज छोड़ दें। क्योंकि लोक रीतियां कहां तक करेंगे? गुरु साहब कहते हैं:

पिरु परदेसि सिगारु बणाए, मनमुख अंधु ऐसे करम कमाए।।
हलति न सोभा पलति न ढोई बिरथा जनमु गवावणिआ।।

लोक–लाज इस तरह है जैसे किसी लड़की का पति उसे छोड़कर परदेस चला जाए और वह यहाँ पर हार श्रृंगार लगाए तो लोग उसकी निंदा करेंगे कि यह बदचलन है, किस पति को हार–श्रृंगार करके दिखा रही है?

करि आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ।
संगु न पाइओ अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ।।

यह लोग बहुत कर्मकांड करते हैं, सेज भी बिछाते हैं, सब कुछ करते हैं लेकिन किस मालिक को लाकर बिठाएंगे? मैं कई बार बताया करता हूँ कि मेरे पिताजी ने उदासी साधुओं से श्री अखंड पाठ करवाया। उन

साधुओं ने कहा कि आप इसके बराबर एक आसन बिछा दें, गुरु नानक देव जी यहाँ तीन दिन आकर बैठेंगे और श्री अखंड पाठ सुनेंगे। मेरे पिताजी ने उसी तरह ही किया।

मैं उन दिनों बच्चा था, मालिक की मौज मुझसे ऐसी गलती हुई कि मैं उस आसन के ऊपर से पैर रखकर निकल गया। पिताजी के क्रोध की कोई हद नहीं रही। मैंने बहुत प्यार से कहा, बहुत मिन्नतें की कि मेरा किसी के साथ पैर नहीं लगा। यह सिर्फ मनो कल्पना बनाई हुई थी। जिन्होंने बानी लिखी है, क्या वे सुनने के लिए आते हैं? उन्होंने बानी दुनिया के फायदे के लिए लिखी है ताकि इसे पढ़कर दुनिया फायदा उठाए। जिस तरह दुनिया जुल्म में बढ़ावा करती है उसी तरह जितने लोग आए लोक–लाज और कर्मकांड को बढ़ाते गए। किसी ने कम नहीं करवाया जो आया वह इसमें इज़ाफ़ा करता गया। हम जाल में इतना फंस गए हैं कि हमारा छूटना ही मुश्किल हो गया है। कबीर साहब कहते हैं:

बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै।

जो कुछ वेद–शास्त्रों में लिखा है, हम उसे विचारते नहीं सिर्फ उसके आगे माथा टेकने में ही गर्व समझते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

आचारी नही जीतिआ जाइ, पाठ पड़ै नही कीमति पाइ।।
असट दसी चहु भेदु न पाइआ, नानक सतिगुरि ब्रहमु दिखाइआ।।

अगर आपके दिल में यह ख़्याल हो कि मैं बड़ा लेक्चरर बन जाऊं तो शायद परमात्मा को प्राप्त कर लूँगा। आप कभी भी इस तरह मन को नहीं जीत सकते। पाठ पढ़ने से आप मालिक को नहीं मिल सकते, न चार वेदों को पता है, न अठारह पुराणों को पता है। उस ब्रह्म के दर्शन कोई पूरे गुरु ही करवा सकते हैं।

भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ, पूछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइ।।

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि आप हमारे कहने पर न रहें। आप नारद के पुराण पढ़कर देखें, वेद व्यास के बनाए वेद पढ़कर देखें कि गुरु के बिना भक्ति हो ही नहीं सकती। कबीर साहब तो यहां तक लिखते हैं:

जो निगुरा सिमरन करै, दिन में सौ सौ बार।
वेश्या सती होना चाहे कौन करे परतार।।

अगर वेश्या सती होना चाहे कि फलानी स्त्री सती हो गई थी, मैं भी सती हो जाऊं। जिसका पति है वह तो सती हो सकती है लेकिन जिसका कोई पति है ही नहीं वह किसके साथ सती होगी? इसी तरह निगुरा दिन में चाहे हज़ार बार सिमरन करे, वह कभी भी मालिक के दरबार में परवान नहीं क्योंकि कानून सबके लिए है।

राम कृष्ण से को बड़ो तिनहु भी गुर कीन।
तीन लोक के नायका गुरु आगे अधीन।।

कबीर साहब कहते हैं कि राम और कृष्ण इस दुनिया में आए उन्होंने भी मर्यादा पूरी की। मैं कई बार कबीर साहब की हिस्ट्री सुनाया करता हूँ कि कबीर साहब दुनिया में पहले सन्त थे, वे कभी भी इंसानी जामे से नीचे नहीं गए, वे चारों युगों में आए। सतयुग में उनका नाम सतसुकृत, त्रेता में मुनिन्द्र, द्वापर में करुणामयी और कलयुग में कबीर पड़ा। बेशक वे परम सन्त थे, कुल मालिक थे फिर भी यहां आकर उन्होंने मर्यादा पूरी की। लोगों ने ताना मारना शुरू किया कि कबीर का कोई गुरु नहीं।

कबीर साहब के दिल में ख़्याल आया अगर मैंने किसी ऐरे–गैरे को गुरु बना लिया तो लोग कहेंगे कि यह तो प्रसिद्ध नहीं है। उस वक्त रामानंद की हिन्दुओं में बहुत मान्यता थी। कबीर साहब के दिल में ख्याल आया कि क्यों न रामानंद को ही गुरु धारण किया जाए। रामानंद मुसलमानों को मुंह नहीं लगाते थे लेकिन कबीर साहब मुसलमान जुलाहा परिवार से थे, यह बहुत मुश्किल थी।

एक दिन कबीर साहब बच्चे का रूप धारण करके गंगा के किनारे सीढ़ियों पर लेट गए जहां रामानंद रोज़ स्नान करने जाते थे। सुबह का वक्त था, रामानंद की खड़ाव उन्हें लगी या नहीं लगी यह तो बहाना ही बनाया था और कबीर साहब रोने लगे। रामानंद ने कहा, ''राम के राम कहो, राम के राम कहो।'' रामानंद जी अपने घर आ गए और कबीर साहब भी वहाँ से चुपचाप आ गए। कबीर साहब ने दुनिया में कहना शुरू कर दिया कि मेरा गुरु रामानंद है।

जब हिन्दुओं को पता चला तो वे सारे इकट्ठे होकर रामानंद के पास गए और कहने लगे, ''अगर आपको चेलों की इतनी भूख थी तो हिन्दू बहुत थे, आप उनमें से चेला बना लेते, चाहे और सौ चेले बना लेते।'' रामानंद ने कहा, ''मैंने किसी कबीर को गुरु मंत्र नहीं दिया, कोई कबीर मेरा चेला नहीं है।'' उन लोगों ने फिर कबीर साहब के पास आकर कहा, ''तू कहता है कि मेरा गुरु रामानंद है, पर रामानंद कहते हैं कि मैंने किसी कबीर को अपना चेला नहीं बनाया।'' कबीर साहब ने कहा, ''चलो, मेरे साथ बात करवा दो।'' सब रामानंद के पास चले गए लेकिन वह किसी मुसलमान को मुंह नहीं लगाते थे इसलिए पर्दा कर लिया और बैठ गए।

रामानंद कर्मकांडी थे, विष्णु की पूजा करते थे, उन्होंने मूर्ति को मुकुट तो पहना दिया लेकिन माला पहनानी भूल गए। वे अंदर बैठे थे और बाहर लोग चर्चा करने के लिए राह देख रहे थे। अगर वे मुकुट निकालते तो बेअदबी हो जाती लेकिन मुकुट के साथ गले में माला नहीं पहना सकते थे। वे सोच रहे थे कि अब मैं क्या करूँ? कबीर साहब बाहर बैठे कहने लगे, ''गुरु जी, माला की कुंडी खोलकर गले में पहना दें।'' रामानंद के पैरों तले ज़मीन खिसक गई कि पर्दे के पीछे से इसे कैसे पता चला? खैर रामानंद जी पर्दे के दूसरी तरफ से बोले कि मैंने तुझे कब दीक्षा दी? कबीर साहब ने कहा, ''फलाने दिन गंगा किनारे जब आपकी खड़ाऊ लगी

थी, तब आपने कहा था कि राम के राम कहो।'' रामानंद ने कहा कि वह तो बच्चा था। कबीर साहब ने कहा, ''मैं अभी आपको बच्चा बनकर दिखा सकता हूँ।'' कमाई वालों के लिए क्या मुश्किल है? तुलसी साहब कहते हैं:

जे कोई कहे संत को चीना, तुलसी हाथ कान पे दीना।

मैं कानों को हाथ लगा लूंगा अगर कोई यह कहे कि मैं सन्त का भेद जान लूँगा। एक दिन तुलसी साहब अपनी मौज में कहने लगे:

रहू री विदेह ते देह दरसाऊं।

उनकी सेविका ने कहा कि आप यह बात कैसे कह सकते हैं? आप हमारे सामने देह में बैठे हैं। तुलसी साहब ने कहा, ''तू पकड़ ले।'' वह सेविका उन्हें पकड़ने की कोशिश करे लेकिन हाथ में कुछ न आए। वे सामने बैठे बोले, ''अरे पगली! पकड़।'' इसी तरह कबीर साहब ने कहा, ''अगर आप यह समझते हैं कि वह बालक था तो मैं अभी आपको बालक बनकर दिखा देता हूँ।'' और रामानंद जी ने पर्दा हटा दिया।

कबीर साहब परम सन्त थे फिर भी उन्होंने रामानंद को गुरु धारण किया, उनके दिल में दया आई कि रामानंद का भी कुछ बन जाए। रामानंद कर्मकांड में लगे हुए थे और उसे छोड़ नहीं सकते थे अगर उसे सीधा कह देते कि तू यह छोड़ दे तो वह ठीक नहीं होता शायद वे नहीं मानते।

रामानंद ने चेलों से कहा कि मेरे पितृों का श्राद्ध है, दूध और सामान ले आओ। सब बाहर के गाँव में दूध लेने चले गए क्योंकि आज की तरह डेयरी फार्म नहीं होते थे। कबीर साहब भी उन चेलों के साथ चले गए। आगे एक मरी हुई गाय पड़ी थी, कबीर साहब उसके मुँह में दाना डालकर डंडे से धकेलने लगे।

मरी हुई गाय ने क्या खाना था? उसका दूध निकालने लगे मगर दूध कैसे निकलता? सारे चेले कहने लगे, ''रामानंद कहते हैं कि कबीर होनहार है, देखो यह क्या कर रहा है?'' उन सबने आकर रामानंद से

शिकायत की, ''महाराज, कबीर साहब ऐसा कर रहे थे।'' उन्होंने कबीर साहब को बुलाया और कहा, ''क्यों भई, तू मरी हुई गाय के मुँह में दाना डाल रहा था? कभी मरे हुए ने भी खाया है? फिर तू मरी हुई गाय का दूध निकाल रहा था, क्या मरी हुई गाय ने कभी दूध दिया है?''

कबीर साहब ने कहा, ''गुरुजी, क्या आपको यह यकीन है कि मरा हुआ दूध नहीं दे सकता या कुछ नहीं खा सकता?'' रामानंद ने कहा, ''हाँ, यकीन है इसलिए तो मैं तुमसे बात कर रहा हूँ।'' कबीर साहब ने कहा कि फिर आपके पितृ आपके पास नहीं, वे मर गए हैं, वे किस तरह पूरी और हलवा खा लेंगे? आपको मुराद किस तरह देंगे? पते के बगैर खत नहीं पहुँचता तो हमसे चीज़ें लेकर कौन पितृों तक पहुँचा देगा? किसी आदमी का मुँह लेटर बॉक्स नहीं कि यहां चिट्ठी डाली जाए और वहां मिल जाएगी, यहां मुँह में खीर डाली जाए और वहां मिल जाए। आप एक बन्दे को घर की छत पर बैठा दें और दूसरा बंदा छत के नीचे बैठ जाए और वह ऊपर वाले का नाम लेकर खा ले अगर उसे असर हो जाए तो स्वर्ग में पितृों को भी असर हो जाएगा। खाने वाले लोगों ने हममें यह भ्रम और वहम डाल दिए हैं। कबीर साहब कहते हैं:

जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही।।
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही।।

जीते जी कोई बुजुर्ग को पानी का गिलास नहीं देता, बुजुर्ग किसी को पसंद नहीं लेकिन उसके मरने के बाद घर लुटा देते हैं चाहिए तो यह कि जीवित की सेवा करें।

शाहज़हां को जब उसके पुत्र औरंगज़ेब ने कैद किया तो उसने पत्र लिखा कि देख बेटा, जिन हिन्दुओं को तू भला–बुरा कहता है, वे तो अपने मरे हुए पितृ को भी पानी पहुँचाते हैं, श्राद्ध करते हैं। मैं तेरा पिता ज़िंदा हूँ, मुझे पानी की बड़ी दिक्कत है, तू दरोगा को कम से कम यह हुक्म दे दे

कि मुझे पानी तो जी भरकर पीने के लिए दे। औरंगज़ेब ने उसे यह जवाब दिया कि जिस स्याही से तूने यह पत्र लिखा है, जब प्यास लगे तब उसी कलम को चूस लिया कर। ज़िंदा हो तब हम मानते नहीं और मरने के बाद लोक–लाज निभाते हैं इसलिए सन्त कहते हैं कि लोक–लाज छोड़ दें और **परमात्मा की भक्ति** करें।

सुभ आसुभ दोउ काटु पाँव की अपने बेरी।
निसि दिन रहौ अनन्द कोऊ का करिहै तेरी।।

आप कहते हैं कि दिल से यह ख्याल ही निकाल दें कि लोग हमें अच्छा ही कहेंगे। आप खुद सोचकर देख लें, न तो यहाँ की निंदा हमारे साथ जाएगी और न ही बड़ाई जाएगी, यहां की बड़ाई यहीं रह जाएगी। जब किसी के हाथ में हुकूमत होती है तो हम उसकी इज्जत–मान करते हैं, उसके गले में हार डालते हैं, अखबार में उसकी जय–जयकार करते हैं, उसे बड़े–बड़े खिताब दे देते हैं लेकिन जब उसके हाथ से हुकूमत चली जाती है फिर अखबार में उसकी बेइज्जती करना शुरू कर देते हैं, उसे भला–बुरा बोलना शुरू कर देते हैं।

महात्मा बड़े प्यार से समझाते हैं कि यह दुनिया मान–बड़ाई देते वक़्त आगे–पीछे नहीं देखती और छीनते वक्त भी आगे–पीछे नहीं देखती। इसलिए सन्त कहते हैं कि आप न तो निंदा की परवाह करें और न ही बड़ाई में फँसें। आप मग्न रहें, खुश रहें और **परमात्मा की भक्ति** करें अगर कोई निंदा करता है तो अपने लिए करता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि आप जिसकी निंदा करते हैं उसके जितने अवगुण हैं, वह आपके खाते में जमा हो जाएंगे और आपके जितने भी गुण है, वह उसके खाते में जमा हो जाएंगे। अफ़सोस की बात यह है कि हर चीज़ में कोई न कोई रस होता है लेकिन निंदा न खट्टी है, न मीठी है, न कड़वी है, इसमें कोई स्वाद नहीं फिर भी इंसान सारा दिन

इसके पीछे लगा हुआ है। शेख सादी ने कहा था कि आप जिसकी निंदा करते हैं, उसके सारे अवगुण आपको मिलेंगे अगर मुझे निंदा करनी हो तो मैं अपनी माता की निंदा करूंगा ताकि कम से कम हमारे गुण हमारे घर में ही रह जाएं लेकिन हम आम लोगों को, मज़हब वालों को निंदा करने की आदत लगी हुई है। गुरु साहब कहते हैं:

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि।।
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि।।

निंदा तो पापी की भी करनी गुनाह है अगर हम किसी कमाई वाले की निंदा करेंगे तो हमारे लिए नरक और चौरासी तैयार ही है। आप दुनिया की परवाह न करें कि लोग हमारी निंदा करेंगे।

पलटू सतगुरु चरन पर डारि देहु सिर भार।
तन मन लज्जा खोई कै भक्ति करौ निर्धार।।

अगर यह दुनिया बड़ाई करेगी तो पता नहीं कब छीन लेगी इसलिए आप उठते–बैठते, सोते–जागते गुरु–गुरु ही करें। गुरु साहब कहते हैं:

गुरू गुरू गुरु करि मन मोर, गुरू बिना मै नाही होर।।

जब मैं शुरू–शुरू में अभ्यास करता था तो मेरे बहुत सारे रिश्तेदारों, यार–दोस्तों ने कहा कि तेरे दिमाग में कोई नुक्स है, तेरा इलाज करवा लाते हैं। दिल में यह ख़्याल आता था कि दिमाग में कोई नुक्स नहीं है। एक दिन मैं अपने खेत में बैठा था कि एक औरत ने आकर मुझसे कहा कि आपके पूर्वज किसी देवी–देवता को न मानते हों, मैं ईंटें ले आती हूँ, तू माथा टेक ले, ठीक हो जाएगा। मैंने उससे कहा अफ़सोस की बात है, तूने मेरा कौन–सा पागलपन देखा है? वह कहने लगी, ''तू ऐसे ही कपड़ा लेकर सारा दिन बैठा रहता है, तुझमें जरूर कोई नुक्स है।''

कहने का भाव अगर कोई भक्ति करता है, अगर उसका दिमाग ठीक है फिर भी हम दुनियादार उससे कह देते हैं कि तुझमें कोई नुक्स है। मेरे खेत से थोड़ी दूर एक मढ़ी थी, वह औरत मुझसे कहने लगी, ''हम उस मढ़ी को मानते हैं। हमारा कोई रिश्तेदार पागल था, वह ठीक हो गया, तू भी वहां जाकर मिट्टी डालना शुरू कर दे।''

कुदरती एक दिन मैं वहाँ भजन करने चला गया क्योंकि लोग मेरे खेत में आकर मुझे तंग करते थे इसलिए मैं एक खेत आगे चला गया। जब वे वहाँ लस्सी चढ़ाने और माथा टेकने गए, आगे मैं वहाँ चेहरे पर कपड़ा डालकर बैठा था। वे जो लस्सी वगैरह लेकर गए थे, वहीं छोड़कर भाग आए। उसका घरवाला कहने लगा, ''वहाँ तो सन्त बैठे होते हैं।'' अब वे दोनों ही परेशान हो गए, घरवाले ने सोचा कहीं यह घबराकर मर न जाए इसलिए वे वहाँ आकर बैठ गए। अब मैं उठूं तो उनकी जान छूटे और उसे दिखाए की वास्तव में वहाँ मैं ही हूँ। मैं दो–ढाई घंटे बाद उठा। उसका घरवाला कहने लगा, ''देख, मैंने तुझे कहा था कि बाबा है।''

मैंने उससे कहा, ''अफ़सोस, आप उस मढ़ी को मानते हैं अगर बाबा प्रकट हो गया है तो उसके पैरों पर माथा टेकें।'' हम दुनियादार ऐसे ही हैं और हमारी ऐसी ही प्रीत है। मैं तब भी यही कहा करता था:

कृपाल सिंह नूं सिमर के पापी तरे अनेक।
कहे अजायब ना छोड़िए कृपाल सिंह दी टेक।

सारा दिन गुरु–गुरु जपें। गुरु को जपकर अनेक पापियों का उद्धार हो जाता है। हमें भी चाहिए की उठते–बैठते, सोते–जागते गुरु का दिया हुआ सिमरन याद करें क्योंकि गुरु की याद लाखों पापों से बचा लेती है, हमारी आत्मा को किनारे पहुँचा देती है। गुरु की याद ही हमारी ज़िन्दगी का उद्धार है।

***

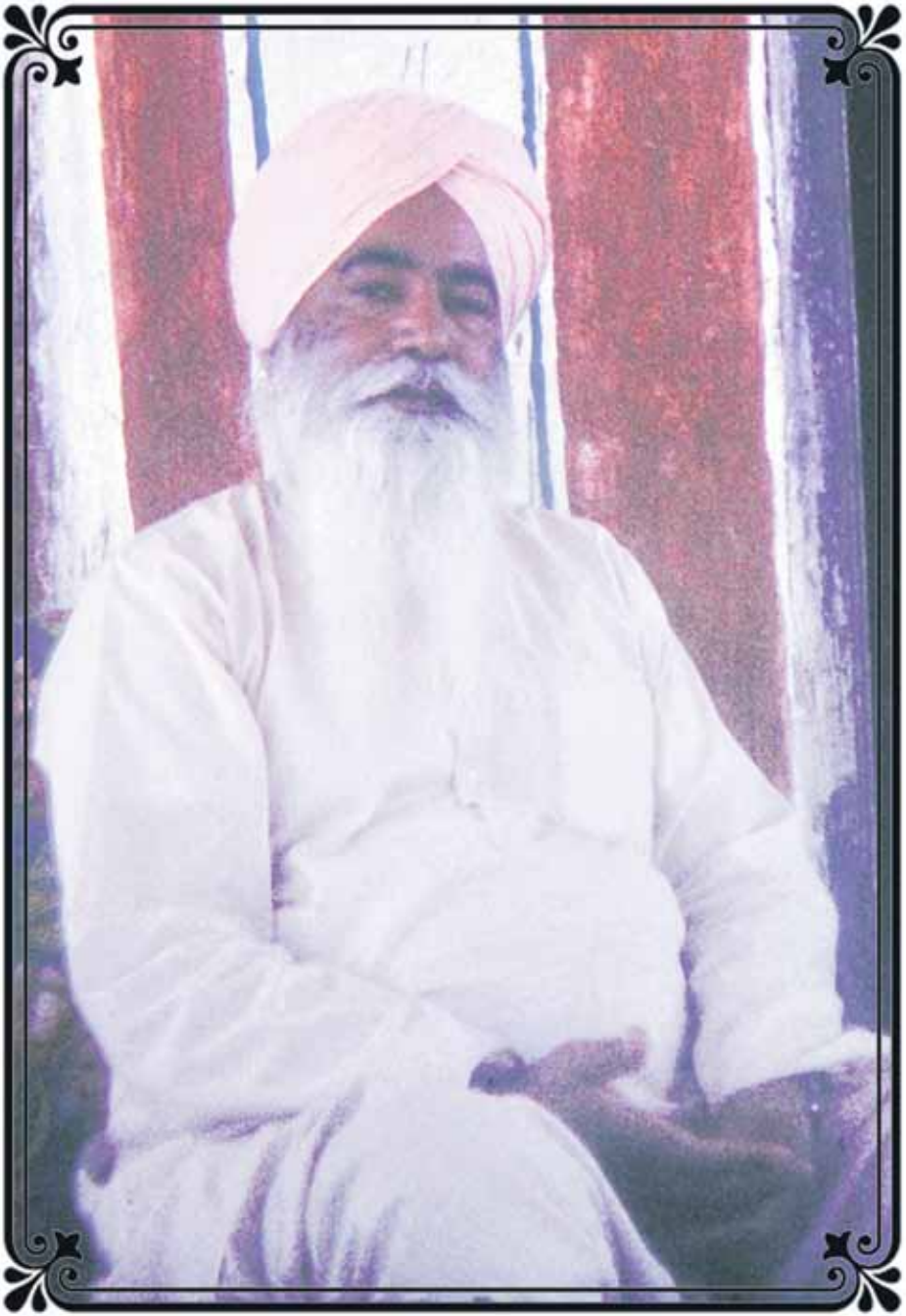

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

आत्मा का शीशा

17 अक्टूबर 1996 साँपला (हरियाणा)

एक प्रेमी: *प्यारे महाराज जी,* ***आत्मा का शीशा*** *कहाँ है, ये कौन से मंडल हैं? इस पर किस चीज का प्रतिबिम्ब पड़ता है क्या हम इन मंडलों में देख सकते हैं?*

बाबा जी: हाँ भई, सबसे पहले उस करण–कारण परमपिता सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने अपार दया करके हमें अपनी याद में ऐसी प्यार भरी बातें समझने का समय दिया है। वह खुद ही सवाल करता है, खुद ही जवाब देता है, खुद ही बुलाता है, खुद ही बिठाता है खुद ही भजन करता और करवाता है।

सबसे पहले इस सवाल को समझने के लिए मेहनत की जरूरत है। जब हम सतगुरु की बताई हुई युक्ति के मुताबिक अपने ख्याल को बाहर से इकट्ठा करके स्थूल, सूक्ष्म और कारन के तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँचते हैं, तब हमें **आत्मा के शीशे** का ज्ञान होता है।

हम उस शीशे में अपना मुँह इस तरह देख सकते हैं जिस तरह यहां हम शीशे में अपना मुँह देखते हैं। जब हम सिमरन करके आँखों के पीछे पहुँचते हैं तब तन की खोज पूरी हो जाती है, उसके बाद स्थूल पर्दा उतारकर सूक्ष्म से पारब्रह्म की ओर जाते हैं तो मन की खोज पूरी हो जाती है।

अगर हमारे चेहरे पर कोई दाग या धूल–मिट्टी है और कोई सज्जन हमसे यह कहे, ''तेरे चेहरे पर दाग या धूल–मिट्टी है।'' तब हमारे दिल में ख्याल आता है कि मैं तो कहीं गया ही नहीं, मेरे चेहरे पर धूल–मिट्टी क्यों है? अगर वही सज्जन हमारे सामने शीशा कर दे तो शीशा अपने आप ही बता देता है।

यहां कोई अपने आपको औरत, कोई अपने आपको मर्द, कोई अपने आपको हिन्दुस्तानी, अमेरिकन या कोलम्बियन समझता है। कोई अपने आपको हिन्दू, मुस्लमान, सिख या ईसाई समझता है। सभी धर्म गुरु कहते हैं कि परमात्मा एक है, वही सबका दाता है फिर हम एक–दूसरे से नफरत क्यों करते हैं?

मुझे दूसरे विश्व युद्ध में जाने का मौका मिला, मैंने वहां देखा कि सभी हिटलर की शिक्षा पर अमल कर रहे थे, एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए थे। क्राईस्ट का संदेश यह है अगर कोई आपकी गाल पर तमाचा लगाए तो आप उसके आगे दूसरी गाल कर दें। अपने हमसाए के साथ वैसा प्यार करें जैसा हम अपने लिए चाहते हैं। फरीद साहब कहते हैंः

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ।।
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ।।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जिन्हें हम देखते हैं उनसे प्यार नहीं करते तो वह करण–कारण परमात्मा हमें इन आँखों से दिखाई नहीं देता। जो लोग यह कहते हैं कि हम प्यार करते हैं, वे झूठ बोलते हैं।'' मैं कहा करता हूँ, ''किसी की जान लेने से पहले छुरी से अपना माँस काटकर देखें। आत्मा उस जानवर में भी है, उसे भी दर्द होता है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पश्चिम के लोग पढ़ने पर बहुत जोर देते हैं लेकिन अंदर की चढ़ाई पर कम जोर देते हैं।'' सन्त जुबानी जमा खर्च नहीं करते, उन्होंने **आत्मा का शीशा** देखा होता है। वे कहते हैं, ''परमात्मा एक है और सभी में समाया हुआ है। सन्त सब मुल्कों और समाजों को अपना समझते हैं।''

पारब्रह्म में पहुँचकर आत्मा को साधगति प्राप्त हो जाती है, आत्मा जान जाती है कि न मैं औरत हूँ न मर्द हूँ और न ही इस दुनिया की रहने वाली हूँ। मेरा देश सच्चखंड है, मेरा पति परमात्मा है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

जिउ जल महि जलु आइ खटाना।।
तिउ जोती संगि जोति समाना।।

परमात्मा प्यार का समुंद्र है, आत्मा उसकी बूँद है और 'शब्द' लहर है। आप खुद ही फैसला करें कि समुंद्र और बूँद का क्या रिश्ता है। जब तक यह बूँद समुंद्र से बिछुड़ी हुई है तब तक आत्मा कहलाती है, जब इसका मिलाप उस लहर 'शब्द' के साथ हो जाता है तब यह परमात्मा के साथ मिलकर परमात्मा ही हो जाती है। छात्र तब तक ही छात्र कहलाता है जब तक उसे डिग्री नहीं मिल जाती, डिग्री मिलने पर दोनों ही अध्यापक हो जाते हैं।

शिष्य जब तक 'शब्द' के साथ नहीं मिलता तब तक ही मन इन्द्रियों का गुलाम है। गुरु रामदास जी कहते हैं, ''तू आप ही गुरु है आप ही चेला है।'' गुरु द्वारा ही तुझे ध्याया जाता है। बच्चे के अंदर विद्या सोई हुई है और अध्यापक के अंदर जागी हुई है। बच्चा जब अध्यापक की सोहबत करता है तो उसकी सोई हुई विद्या जाग जाती है अगर बच्चा अध्यापक का कहना नहीं मानता तो वह पास होने की उम्मीद कैसे कर सकता है? इसी तरह हमें भी चाहिए कि हम नाम लेकर दिन–रात मेहनत करें, सन्तों की हिदायतों का सच्चे दिल से पालन करें।

एक प्रेमी: *उस दिन आप '**मेरा कागज गुनाह वाला पाड़ दे**' वाले भजन के बारे में समझा रहे थे कि सेवक को कभी भी गुरु के लिए अभाव नहीं लाना चाहिए, कभी भी ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि गुरु एक इंसान हैं बल्कि उसे श्रद्धा बनाए रखनी चाहिए कि गुरु सर्वशक्तिमान भगवान है, जब मन में शक के ख्याल आते हैं तो उन ख्यालों को पहचानना बहुत आसान होता है। कई बार शक नहीं आते लेकिन जाहरी रूप से कोई कमी रह जाती है तो ऐसा लगता है कि जो डोर गुरु और सेवक को बाँध रही है, वह बहुत कमजोर हो गई है। मेरा सवाल यह है कि जब हमारे वश की बात न रहे तो हम किस तरह गुरु के लिए श्रद्धा कायम रख सकते हैं?*

बाबा जी: हाँ भई, आप जानते हैं जिस मकान की नींव मजबूत न हो वह मकान ज्यादा देर तक खड़ा नहीं रह सकता, गिर जाता है। श्रद्धा ही हमारी जिंदगी की नींव है अगर सन्तमत में श्रद्धा न हो तो हम नामदान नहीं ले सकते अगर हमारे अंदर श्रद्धा होती है तभी हम सतसंग में आते हैं और नामदान प्राप्त करते हैं।

मैं हमेशा सतसंग में कहता हूँ कि जो श्रद्धा और तड़प नामदान के समय होती है अगर वैसी ही श्रद्धा और तड़प जिंदगी भर बनी रहे तो अपना तरना तो क्या हम करोड़ों जीवों का उद्धार कर सकते हैं। 'शब्द' की डोर इतनी मजबूत है कि तोड़ने से टूट नहीं सकती छोड़ना चाहें तो छोड़ नहीं सकते। इसे काल की ताकत भी नहीं तोड़ सकती। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी।

नामदान देते समय गुरु काल से डोरियां ले लेता है और इन डोरियों को सच्चखंड में बाँध देता है। मन अंदर से ही हमें वकील की तरह सलाह देता रहता है। एक सलाह खत्म नहीं होती कि दूसरी शुरु कर देता है अगर मन की सलाह सुनने बैठेंगे तो भजन नहीं कर सकते। श्रद्धा के बिना आप अपने घर का कामकाज भी नहीं कर सकते।

मेरा ख्याल है अगर हमारे अंदर श्रद्धा न हो तो हम बिस्तर से भी नहीं उठ सकते, मुँह में निवाला भी नहीं डाल सकते कि यह अंदर जाकर क्या करेगा? हम जानते हैं कि हर एक पर एक ऐसा समय आता है जिसे मौत कहते हैं। धर्मग्रन्थों में लिखा है कि उस समय फरिश्ते आते हैं जो बहुत तंग करते हैं। वहां माता–पिता, बहन–भाई, समाज और धन–दौलत कोई भी हमारी मदद नहीं करते। वहां गुरु हमारी मदद करता है, वह हमें फरिश्तों के पास नहीं जाने देता।

रिश्तेदार गरज का प्यार करते हैं, माता पुत्र से कुछ न कुछ लालच रखती है। गुरु का प्यार ही बेगरज और निस्वार्थ है। अगर हम जंगल में

रास्ता भूल जाते हैं, चोर लुटेरे हमारा कत्ल करने के लिए तैयार हैं और हमें शेर चीतों का भी डर है। वहां गुरु हमारी मदद करता है, बाँह पकड़ लेता है किसी को पास नहीं आने देता। आपको उस समय गुरु पर श्रद्धा ही नहीं यकीन भी हो जाएगा। आप उस पर सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार हो जाएंगे।

प्यारेयो, जब यह गरीब आत्मा शरीर छोड़ती है, उस समय इसे कर्मों के मुताबिक यमदूत आते हुए दिखाई देते हैं। वहां इसका कोई मददगार नहीं होता। जिस गुरु ने नाम दिया है वही साथी है मदद के लिए आता है।

हमें सदा ही गुरु पर श्रद्धा बनाए रखनी चाहिए और मन को भजन की ड्यूटी में लगाए रखना चाहिए। गुरु ने हमें बड़ी श्रद्धा के साथ नाम दिया है, गुरु चाहता है कि मैं इसका सुधार करके इसे इसके घर पहुँचाऊंगा, गुरु के प्यार में कभी कमी नहीं आती। ***

धन्य अजायब

2024 में सतसंगों के कार्यक्रम

6	5 – 7 जुलाई	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	अहमदाबाद
7	2 – 4 अगस्त	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	जयपुर
8	7 – 12 सितंबर	शनिवार से वीरवार (6 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
9	4 – 6 अक्तूबर	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
10	1 – 3 नवंबर	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
11	29 नवंबर – 1 दिसंबर	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम

RNI No - RAJHIN/2003/9899